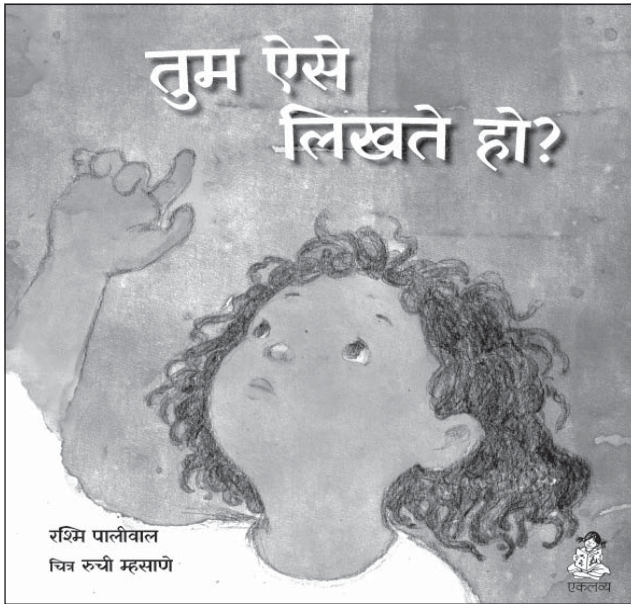


तुम ऐसे लिखते हो? बच्चों के लिखना सीखने के रुझान को दिखाती किताब

कमलेश चन्द्र जोशी



इन दिनों बाल साहित्य में विविध विषयों को केन्द्र में रखकर अनेक किताबें प्रकाशित की जा रही हैं। हाल ही में रश्मि पालीवाल द्वारा लिखित और एकलव्य द्वारा प्रकाशित किताब *तुम ऐसे लिखते हो?* पढ़ने को मिली। यह किताब एक नए विषय यानी बच्चों की शुरुआती साक्षरता व भाषा

विकास की ओर हमारा ध्यान खींचती है। हिन्दी बाल साहित्य में बच्चों को केन्द्र में रखकर अनेक किताबें लिखी गई हैं लेकिन इस विषय पर इससे पहले ऐसी कोई किताब देखने या पढ़ने को मिली हो, ऐसा याद नहीं आता। इस किताब का मुख्य विषय बच्चों में प्रारम्भिक वर्षों के दौरान

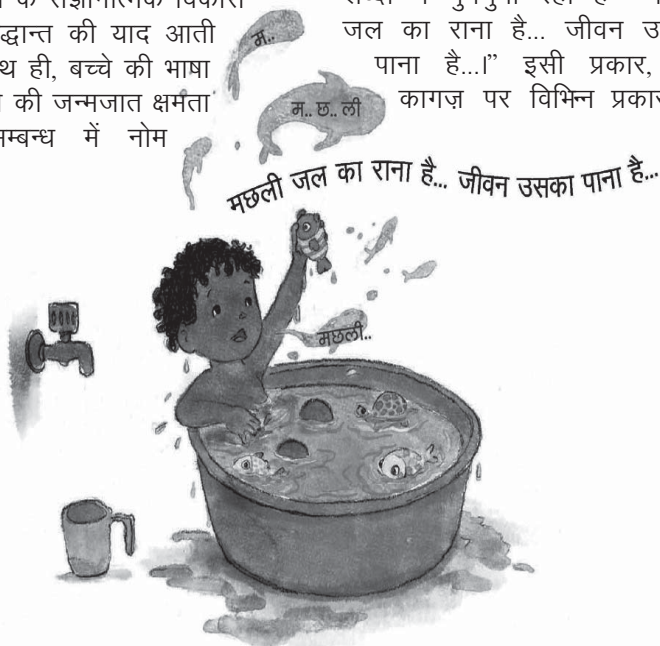
लिखना सीखने के प्रति विकसित होने वाली रुचि और उसकी प्रक्रिया है।

इस किताब को पढ़ते हुए समझ में आता है कि घर में पढ़ने-लिखने का अनुकूल वातावरण किस प्रकार बच्चों में पढ़ने-लिखने के कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस किताब में लेखिका ने अपनी बेटी के दो से आठ वर्ष की आयु तक के लेखन-विकास की यात्रा को सहेजकर रखे गए चित्रों और उसकी लिखित सामग्री के माध्यम से क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया है। किताब को पढ़ते हुए बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की याद आती है। साथ ही, बच्चे की भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता के सम्बन्ध में नोम

चॉम्स्की द्वारा प्रतिपादित अवधारणा भी इस पूरी प्रक्रिया में साकार होती दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त, पुस्तक में बच्चों में विकसित होने वाली उद्गामी साक्षरता (emergent literacy) की स्पष्ट झलक भी देखने को मिलती है।

ध्वनियों से लेखन की शुरुआत

किताब की शुरुआत में ही यह दिखाया गया है कि दो साल की लाली ध्वनियों के साथ प्रयोग करते हुए अपनी तरह की रचनाएँ कर रही है। वह 'मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है' गीत को अपने शब्दों में गुनगुना रही है- "मछली जल का राना है... जीवन उसका पाना है..." इसी प्रकार, वह कागज़ पर विभिन्न प्रकार के





निशान बनाकर उन्हें नाम दे रही है- “ये मैंने अप्रीगो... ये तप्रीगो... ये कोकी... ये कोकी... ये कुमछिल... ये ब्रेगो... ये तोफी हागो, दोंगो, बागो, लागो, मोगो... तीगी... फागू, लागू, मागू, लागू, ये पांगू...” लेखिका इन उदाहरणों के माध्यम से यह प्रभावी ढंग से दिखाती है कि औपचारिक लेखन सीखने से पहले ही बच्चा ध्वनियों, शब्दों और प्रतीकों के साथ प्रयोग करना शुरू कर देता है।

इस प्रारम्भिक चरण में लाली द्वारा बनाए गए आकार किसी वस्तु के चित्र नहीं हैं, बल्कि वे प्रतीकात्मक रेखांकन (स्क्रिब्लिंग) हैं। ध्वनियों और प्रतीकों के साथ प्रयोग करते हुए शब्दों की रचना करने की उसकी यह क्षमता क्रमशः विकसित होती जाती है

और किताब के अन्तिम हिस्से में आठ वर्ष की लाली द्वारा हिन्दी और अंग्रेज़ी लिपि में लिखी गई कहानी तक पहुँचती है। लाली की कहानी ‘एक दिन की बात है...’ से शुरू होती है और अन्त में किसी कल्पित पाठक को ‘थैंक यू’ कहकर समाप्त होती है। लाली की इस यात्रा से बच्चों को सोचने, बोलने, चित्र बनाने, चित्रों पर बात करने का माहौल मिलने का असर साफ तौर पर दिखता है। पढ़ना और लिखना उसी प्रक्रिया का स्वाभाविक विस्तार बन जाते हैं। किताब इस बात को भी रेखांकित करती है कि उचित मार्गदर्शन और समृद्ध भाषायी परिवेश मिलने पर बच्चों में लेखन-कौशल सहज रूप से विकसित होता है। इसके कई साक्ष्य

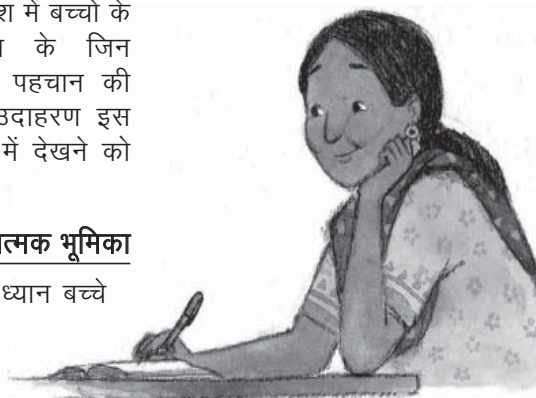
किताब में ही मिल जाते हैं, जैसे लाली अपनी अम्मा को ऑफिस की रिपोर्ट तैयार करते हुए देखती है। इसी प्रकार, जब वह अपने बनाए चित्रों के बारे में कुछ बताती है, तो उसकी अम्मा पूरी रुचि के साथ उसकी बातें लिखती जाती है। इससे बच्ची को यह एहसास होता है कि उसके विचार और अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण हैं व उन्हें लिखित रूप दिया जा सकता है।

किताब के पन्ने पलटते हुए आपको सहज ही यह अनुभव होता है कि लाली का लेखन-कार्य चित्र बनाने के साथ-साथ आगे चलता रहता है। यहाँ चित्रों पर भी गौर करना ज़रूरी है। शुरुआती चित्रों और बाद के चित्रों की तुलना करने पर उनकी जटिलता और अभिव्यक्ति में आए क्रमिक विकास को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। साक्षरता, कला व प्रिंट-समृद्ध सांस्कृतिक परिवेश में बच्चों के चित्रांकन के विकास के जिन सार्वभौमिक चरणों की पहचान की गई है, उनके अनेक उदाहरण इस किताब में सजीव रूप में देखने को मिल जाते हैं।

अभिभावक की सहयोगात्मक भूमिका

इस प्रसंग में हमारा ध्यान बच्चे के साथ-साथ शिक्षक और अभिभावक की भूमिका की ओर भी जाता है। बच्ची स्वयं

सोचती है, खोजती है, प्रयोग करती है और लगातार प्रश्न पूछती है, जबकि अभिभावक उसकी जिज्ञासाओं की पुष्टि करते हैं, आवश्यक जानकारी देते हैं और सीखने की प्रक्रिया में उसका सहयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, लाली लिखने की शैली और शब्द-निर्माण के रहस्य को समझने का प्रयास करती है और अपनी अम्मा से उसकी पुष्टि करती है। वह पूछती है— “s-o-n-k-e-y क्या होता है? n-o-s-k-e-y क्या होता है? o-n-s-k-e-y क्या होता है?” यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि वह कैसे वर्णों के हेर-फेर से शब्द बना रही है और फिर उसकी अम्मा इन संयोजनों को पढ़कर ‘सौनकी’, ‘नौस्की’ और ‘औस्की’ जैसे उच्चारण बताती है। यह दर्शाता है कि बच्चों के साथ संवाद को किस प्रकार सहज और



अम्मा लिखती जाती है।

सहयोगात्मक ढंग से संचालित किया जा सकता है और बच्चे कैसे उससे समझ बनाते हैं।

पुस्तक में आगे बढ़ने पर बच्चों द्वारा विकसित की गई स्ववर्तनी के अनेक उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। इसके बाद औपचारिक शब्दों का उपयोग एवं भावना और अभिव्यक्ति के विकास के नमूने भी हम देख सकते हैं। इस किताब को पढ़ते हुए बाल लेखन पर व्यापक कार्य करने वाली ऐनी हास डायसन की अवधारणाएँ याद आती हैं। उनका मानना है कि बच्चे अपने शुरुआती लेखन में अनेक प्रकार की संकेत प्रणालियों का इस्तेमाल करते हैं। डायसन यह भी बताती हैं कि बच्चों के शुरुआती लेखन-प्रयासों का मूल्यांकन केवल लिखित शब्दों के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उनसे होने वाली बातचीत, उनके हाव-भाव, चित्रांकन, काल्पनिक खेल आदि को भी स्वीकृति देनी चाहिए। यह दृष्टिकोण भी इस किताब में अच्छे से उभरकर आता है।

किताब के लगभग हर पृष्ठ पर विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से लाली के स्वाभाविक भाषायी और लेखन विकास को बहुत अच्छी तरह से दर्शाया गया है। इस किताब को पढ़ते हुए जब हम विद्यालयों, विशेषकर पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं की शिक्षण-प्रक्रिया पर गौर करें, तो समझ में आता है कि वहाँ प्रायः पढ़ना-लिखना

सीधे वर्णों, मात्राओं और शब्दों के अभ्यास से शुरू कराया जाता है। हालाँकि, हाल के वर्षों में प्रारम्भिक साक्षरता को लेकर विमर्श आगे बढ़ा है और बच्चों के मौखिक भाषा विकास, संवाद एवं कक्षा में भाषा-समृद्ध माहौल उपलब्ध कराने पर बल दिया जाने लगा है, लेकिन ये विचार अभी व्यापक रूप से शिक्षकों की शिक्षण-प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बन पाए हैं। ऐसे में लगता है कि यह किताब एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ-सामग्री के रूप में उपयोग में लाई जा सकती है।

भाषा-समृद्ध परिवेश का महत्व

किताब में कहीं भी प्रत्यक्ष रूप से यह नहीं बताया गया है कि लाली के साथ घर में पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाएँ किस प्रकार की जाती थीं। फिर भी, किताब को गौर से पढ़ने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसे घर में नियमित रूप से पुस्तकें पढ़कर सुनाई जाती होंगी, उन पर बातचीत होती होगी और किताबों से उसका निरन्तर सान्निध्य रहा होगा जिससे उसे इस तरह के भाषाई कौशल को विकसित करने का मौका मिला होगा। लाली का स्कूल में भी वर्णों, मात्राओं और प्रारम्भिक लेखन का औपचारिक शिक्षण चलता रहा होगा जिसने उसके सीखने की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाई होगी। बाकी काम घर के संवादपूर्ण,

और साक्षरता-समृद्ध माहौल ने किए होंगे। यही विचार आज निपुण भारत मिशन में भी प्रमुखता से रेखांकित किया जाता है, जहाँ बच्चों के लिए भाषा-समृद्ध परिवेश को प्रारम्भिक साक्षरता का आधार माना गया है।

मैंने यह किताब आठ वर्ष की एक बच्ची को पढ़ने के लिए दी। बाद में जब मैंने उससे किताब को लेकर उसके अनुभव जानना चाहे तो उसने बताया कि किताब में लिखना सीखने की बात हो रही है और एक लड़की लिखना सीख रही है। इससे स्पष्ट होता है कि पुस्तक का मूल भाव बाल पाठकों तक भी प्रभावी ढंग से पहुँचता है।

इस किताब की लेखिका रश्मि पालीवाल *एकलव्य* फाउण्डेशन से लम्बे समय से जुड़ी रही हैं और वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में विज़िटिंग फैकल्टी के रूप में कार्य कर रही हैं। उनकी बाल विकास और बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में गहरी रुचि रही है। उनकी यह गहरी रुचि इस बात से भी स्पष्ट होती है कि उन्होंने अपनी बेटी के

लेखन और चित्रों को वर्षों तक सहेजकर रखा जो आज पाठकों के सामने एक महत्वपूर्ण किताब के रूप में उपलब्ध है।

इस किताब की सबसे अहम बात यह है कि इसे पढ़ते हुए हमें बच्चों के भाषायी विकास को समझने की एक खास दृष्टि मिलती है। जब हम इन बातों को सैद्धान्तिक रूप से पुस्तकों या प्रशिक्षण सामग्री में अमूर्त रूप में पढ़ते हैं, तो उनका सम्बन्ध बच्चों के वास्तविक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से सहजता से नहीं जोड़ पाते। यह किताब वो जुड़ाव बना पाती है।

चित्रकार रुचि महसाने के चित्र भी किताब को एक जीवन्तता प्रदान करते हैं। लाली द्वारा बनाई गई सामग्री से उन्होंने अच्छे से तालमेल बनाया है जिससे चित्रों में सजीवता आई है। आशा है, यह पुस्तक बच्चों के भाषायी विकास पर चल रहे विमर्श को समृद्ध करेगी और शिक्षक अपनी कक्षा के बच्चों के भाषाई विकास की प्रक्रिया को एक नए नज़रिए से देख सकेंगे।

कमलेश चन्द्र जोशी: प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कई संस्थाओं के साथ जुड़कर तीस वर्षों तक गहराई से कार्य किया। हाल ही में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, ऊधमसिंह नगर से सेवानिवृत्त। वर्तमान में लखनऊ में निवास व कुछ संस्थाओं के साथ जुड़कर स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रहे हैं।

सभी चित्र किताब *तुम ऐसे लिखते हो?* से साभार।

किताब *तुम ऐसे लिखते हो?*, लेखक - रश्मि पालीवाल, प्रकाशक - एकलव्य फाउंडेशन, मूल्य - 90 रुपए।